"काशी मरणान्मुक्तिः" पुस्तक देखने का सुयोग मिला, श्री मनोज जी ठक्कर जी ने इस पुस्तक में जिस प्रकार आध्यात्म की विवेचना की उसकी जितनी प्रशंसा की जाय, कम ही होगी, जिस प्रकार भगवान वेद व्यास बद्रिकाश्रम में समाधिस्थ होकर श्रीमद् भागवत महापुराण के माध्यम से "कृष्णतत्व" का सूक्ष्म विवेचन किये लगता है मनोज जी काशी में रहकर भगवान विश्वनाथ के अनुग्रह से ही इस प्रकार के सूक्ष्म भावों को पुस्तक के रूप में उतारने में सफल हुए, काशी मरणान्मुक्तिः भी समाधि की ही भाषा है, ऐसा लगता है।

नाकुलीश दर्शन, एवं पाशुपत मत जो पुराणों के अवलोकन से नहीं समझा जा सकता है, इस ग्रन्थ के अध्ययन से शिवतत्व की रहस्यमयी प्रस्तुति स्वतः प्रस्फुटित होती है, जीव जो अज्ञानभाव के कारण 'पशु' कहा गया उस पर शिव पशुपति किस प्रकार अनुग्रह करते हैं यह ग्रन्थ इसी अनुग्रह को परिभाषते हैं,

मृत्यु रूपी शाश्वत सत्य सभी को भयभीत किये है, इस भय की निवृत्ति बिना ज्ञान के सम्भव नहीं है, जीव अनन्त जन्म लेकर मृत्यु रूपी कष्ट को अज्ञानवश भुगतता आया है, इसी भय के साथ पैदा होता है व आजीवन इसी भय से व्यथित रहता है, जब शिव का अनुग्रह मिले व काशी वास करता हुआ मृत्यु का स्मरण करता है तो इस जन्म मरण के प्रपञ्च से सदा के लिए मुक्त हो जाता है।

इस ग्रन्थ के भाव वेदान्त सम्मत है।

मेरी भावना है कि 'काशी मरणान्मुक्ति' का अध्ययन एक बार नहीं अनेक बार किया जाए, इस ग्रन्थ के हर सन्दर्भ गीता के रहस्य की भांति गम्भीर व नयी विवेचना के लिए मस्तिष्क को विवश करते हैं। कुम्भ-नीति का यह श्लोक रह-रह कर याद दिला रहा है कि

यावद् स्वस्थमिदं कलेवर गृहं,
यावच्च दूरे जरा
यावच्चेन्द्रिय शक्ति रप्रतिहता
यावत्क्षयो नायुषः ।
आत्मश्रेयसि तावदेव विदुषा
कार्यः प्रयत्नो महान्
प्रोद्दीप्ते भवने तु कूप खननं
प्रत्युद्यमः कीदृशः ॥

अर्थात् जब तक शरीर स्वस्थ है, बुढ़ापे से दूर, व इन्द्रियां अपना ठीक से कार्य कर रही हैं, आयु शेष है, तब तक आत्मकल्याण के प्रयत्न कर लेने चाहिए। घर पर आग लग जाए तब कुआं खोदना निरर्थक है।

'काशी मरणान्मुक्ति' का अध्ययन, निश्चित रूप से आत्म कल्याण चाहने वाले पाठक को सही दर्शन देगी यह मेरी भावना [illegible] है। बहुत ही शुभकामना के साथ।

(signature)
धर्माधिकारी बद्रीनाथ
धाम, हिमालय